بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुज़्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 08.01. 2016 मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

जमाअत के प्रत्येक व्यक्ति को याद रखना चाहिए कि ख़ुदा तआला तुम्हारी सेवाओं का मोहताज नहीं है, तुम्हारी सहायताओं का मोहताज नहीं है, न ही तुम्हारी क़ुर्बानियों का मोहताज है। जब उसने इस सिलसिले को स्थापित किया है तो उसको चलाने का भी वह प्रबन्ध करने वाला है। तुम्हें जो सेवा का अवसर मिलता है उसे फ़ज़्ल-ए-इलाही समझकर करो।

तशह्हुद तअव्वुज़ और सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को एक इलहाम हुआ कि لا الہ الا انا فاتخذنی وکیلا कि मेरे अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं अतः तू मुझे ही अपना कार्य सञ्चन्न करने वाला बना।

अतः इस इलहाम में ख़ुदा तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को यह भी संतुष्टि दिला दी कि तुझे किसी अन्य दिशा में देखने की आवश्यकता नहीं है। तेरे सब काम पूरे करने वाला मैं हूँ। मैं ही इन सब कार्यों की निगरानी करने वाला हूँ औ मैं ही इन कामों के लिए साधन उपलब्ध कराने वाला हूँ। जब तू ने मुझे अपना पूज्य बना लिया और जब मैंने तुझे दीन के प्रसार के लिए खड़ा किया तो फिर किसी दुविधा की आवश्यकता नहीं, मैं ही तेरे सब काम संवारने का सामर्थ्य रखता हूँ और संवारूंगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने स्वयं भी इसकी थोड़ी सी व्याज़्या फ़रमाई है कि अर्थात मैं ही हूँ कि प्रत्येक कार्य में सशक्त हूँ। अल्लाह तआला फ़रमाता है, अतः तू मुझको ही संरक्षक अर्थात कार्य सञ्चन्न करने वाला समझ ले तथा दूसरों का अपने कामों में कुछ भी हस्तक्षेप मत समझ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि इस इलहाम के कारण मुझे भय हुआ तथा मुझ पर सनसनाहट हो गई कि सञ्भतः अल्लाह तआला की दृष्टि में मेरी जमाअत इस योग्य नहीं कि ख़ुदा तआला उसका नाम भी ले। आपने जमाअत का ध्यान केन्द्रित किया कि यह इलहाम ऐसा है कि जमाअत के प्रत्येक व्यक्ति को याद रखना चाहिए कि ख़ुदा तआला तुम्हारी सेवाओं का मोहताज नहीं है, तुम्हारी सहायताओं का मोहताज नहीं है, न ही तुम्हारी क़ुर्बानियों का मोहताज है। जब उसने इस सिलसिले को स्थापित किया है तो उसको चलाने का भी वह प्रबन्ध करने वाला है। तुम्हें जो सेवा का अवसर मिलता है उसे फ़ज़्ल-ए-इलाही समझकर करो। अतः आपकी इस बात को जमाअत के लोगों ने समझा और अल्लाह तआला की कृपाओं को ग्रहण करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मिशन को पूरा कने के लिए हर प्रकार के बलिदानों के लिए तैय्यार हुए। अल्लाह तआला की सहायता के ये दृश्य हम आज तक देख भी रहे हैं। ख़ुदा तआला अहमदियों के दिलों में क़ुर्बानी की महत्ता डालता है तथा वे मूल्यवान नमूने भी दिखाते हैं। जमाअत में वसीय्यत का एक निज़ाम है, चन्दा-ए-आम का एक निज़ाम है इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रेरणाएँ होती रहती हैं और जमाअत के दोस्त इनमें बलिदान के बहुमूल्य उदाहरण पेश करते हैं। दो तहरीकें तो निरन्तर तहरीकें हैं अर्थात तहरीक-ए-जदीद और वक़्फ़-ए-जदीद। जमाअत के दोस्त जानते हैं कि पाकिस्तान में जब तहरीक की गई थी तो ग्रामीण एंव दूर सदूर के क्षेत्रों में तर्बियत तथा तबलीग़ के कामों में तेज़ी पैदा करने के लिए वक़्फ़-ए-

जदीद को जारी किया गया था। फिर यह पूरे विश्व के लिए जारी की गई उस समय भी इसके निश्चित उद्देश्य थे। सम्भवतः किसी के मस्तिष्क में भी यह प्रश्न उठे कि इतनी तहरीकें हैं इनका लक्ष्य क्या है? तो इस विषय पर मैं स्पष्ट कर दूँ थोड़ा सा कि वक़्फ़-ए-जदीद निश्चित देशों तथा निश्चित क्षेत्रों के लिए है, अर्थात इसका निवेश। पश्चिमी तथा धनवान देशों से वक़्फ़-ए-जदीद की मद में जो चन्दा आता है वह भारत तथा अफ़्रीक़ा के सामान्यतः ग्रामीण क्षेत्रों में निवेश होता है बल्कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रह. ने जब इस तहरीक का शेष दुनया के लिए भी विस्तार किया था तो धनवान देशों में वक़्फ़-ए-जदीद को जारी करने का उद्देश्य ही यह था कि भारत के तथा क़ादियान के जो खर्चे हैं वे वक़्फ़-ए-जदीद से पूरे किए जाएँ। जबकि तहरीक-ए-जदीद से जो खर्चे किए जाते हैं वे विश्व के प्रत्येक देश में, जहाँ केन्द्र की सहायता की आवश्यकता हो, क्यूँकि धनराशि केन्द्र में आती है, वहाँ से ये ख़र्चे किए जाते हैं।

वक़्फ़-ए-जदीद के द्वारा बहुत सी योजनाएँ निर्धन देशों अथवा दुर्बल देशों के लिए जारी हैं। जनवरी के पहले अथवा दूसरे जुज़्अः में वक़्फ़-ए-जदीद के वर्ष की भी घोषणा होती है इस लिए मैं आज वक़्फ़-ए-जदीद के संदर्भ में बात करुंगा तथा इस वर्ष के लिए घोषणा भी करुंगा नए साल की तथा पिछले वर्ष की रिपोर्ट भी पेश करुंगा जैसे कि परम्परा है।

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से वक़्फ़-ए-जदीद का अटठावन वाँ वर्ष 31 दिसम्बर 2015 को समाप्त हुआ और इस साल में ख़ुदा तआला की कृपा से वक़्फ़-ए-जदीद में जमाअत के दोस्तों ने 68 लाख 91 हज़ार पाउंड की आर्थिक क़ुर्बानी पेश करने की तौफ़ीक़ मिली और यह वसूली गत वर्ष की तुलना में 6 लाख 82 हज़ार 155 पाउंड अधिक है। इसमें से कुल प्राप्ति का जो एक तिहाई भाग है, उन्हीं देशों में लगाया जाता है अर्थात यह अप्रगति शील अथवा कम प्रगति वाले या अरब देश जो हैं। शेष दो भाग, इसमें से भी आधा क़ादियान तथा भारत की जमाअतों के लिए ख़र्च किया जाता है तथा शेष आधा जो तीसरा भाग है वह फिर अफ़्रीक़ा तथा अन्य देशों में व्यय होता है। हिन्दुस्तान में अब तक इस वर्ष में भी 19 मस्जिदें निर्मित हुई हैं तथा दो मस्जिदें निर्माणाधीन हैं। इस साल 23 मिशन हाउस बनाए गए, चार मिशन हाउस इस समय निर्माणाधीन हैं। इसके अतिरिक्त क़ादियान में भी जलसा गाह तथा विभिन्न योजनाएँ जो हैं उनको पूरा किया गया, उन पर व्यय हुआ। नेपाल में भी, नेपाल भी भारत के अंतर्गत ही है। यहां से वकालत तअमील व तनफ़ीज़ नियन्त्रण करती है तथा भूटान में भी यहीं से होता है नियन्त्रण। इस प्रकार नेपाल में दो पक्की मस्जिदें बनी हैं तथा दो अस्थाई शेड बनाए गए।

मस्जिदों तथा मिशन हाउसों के निर्माण पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाता है प्रत्येक स्थान पर। इसके अतिरिक्त जो काम होते हैं उनमें ख़र्चे भी होते हैं। हिन्दुस्तान में गत वर्ष में तर्बियत की क्लासों का आयोजन हुआ, रिफ़्रेशन कोर्स हुए बड़ी संज़्या में और उन पर ज़ी ख़र्चे होते हैं। इस समय मुअल्लिम जो हैं काम कर रहे हैं भारत में केवल, उनकी संज़्या भी 1127 है। उनके एलाउंसेज़ हैं, उनके निवास स्थान हैं, उनके यात्रा व्यय हैं। इस प्रकार के बड़े बड़े ख़र्च होते हैं। फिर अफ़्रीक़ा है, अफ़्रीक़ा के 26 देश हैं इस समय 1287 स्थानीय मुअल्लिम काम कर रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में मस्जिदों के निर्माण के साथ कई स्थानों पर मुअल्लिमों के निवास के लिए कमरे अथवा मकान भी बनाए गए। फिर इसके अतिरिक्त अन्य ख़र्च, जहाँ निर्माण नहीं होता मुअल्लिमों के निवास के लिए, क्यूँकि जैसा कि मैंने कहा यदि जमाअतें क़ायम रखनी हैं फिर अवश्य ही मुअल्लिम भेजने पड़ते हैं, यद्यपि इनकी संज़्या अभी कम है, हमें बहुत अधिक मुअल्लिमों की आवश्यकता है परन्तु इस प्रकार जितनी सीमा तक किया जा सकता है, प्रयास किया जा सकता है, करना चाहिए। तो जहाँ मकान नहीं बन सकते अभी तुरन्त, वहाँ किराए पर मकान लिए जाते हैं। इस समय भी अफ़्रीक़ा में ही उदाहरणतः 372 ऐसी जमाअतें हैं जहाँ किराए पर मकान लेकर उनके लिए, मुअल्लिमों को

वहाँ रक्खा हुआ है। इस साल में अफ्रीक़ा में 130 मस्जिदों का निर्माण हुआ है। 47 मस्जिदें इस समय निर्माणाधीन हैं और योजनाएँ जो हैं उनकी भी 95 मस्जिदें और बनाने की हैं इस वर्ष में ही। फिर अफ्रीक़ा के 18 देशों में 82 मिशन हाउसेज़ का निर्माण पूरा हो चुका है। 13 देशों में 21 मिशन हाउसेज़ निर्माणाधीन हैं तथा इसके अतिरिक्त भी निर्माण की योजनाएँ हैं। अफ्रीक़ा में तर्बियत के लिए, नौ-मुबाओन की तर्बियत के लिए तर्बियती क्लासेज़ तथा रिफ्रेशन कोर्स भी होते हैं, वे लगभग दो हज़ार एक सौ छप्पन स्थानों पर लगभग 37000 तर्बियत के कोर्स तथा रिफ्रेशर कोर्स पूरे किए गए तथा इनमें लगज़ग एक लाख नौ-मुबाओन ने भाग भी लिया। 1132 इमामों ने ट्रेनिंग ली नौ-मुबाओन की तर्बियत के लिए तथा उनको जमाअत का क्रिया शील अंग बनाने के लिए विभिन्न देशों में इनकी शैक्षिक एंव दीक्षिक क्लासेज़ तथा रिफ्रेशर कोर्सेज़, जैसा कि मैंने बताया, किया जाता है तथा बहुत से नेक प्रकृति के मस्जिदों के इमाम भी बैअत करते हैं, अहमदियत में शामिल होते हैं, उनकी भी दोबारा तर्बियत करनी पड़ती है, तर्बियत देनी पड़ती है वास्तविक इस्लाम के विषय में, बातें सिखानी पड़ती हैं उनकी क्लासें लगाई जाती हैं। वक़्फ़-ए-जदीद में सम्मिलित होने वाले निष्ठावान लोगों की संज़्या, 2010 में यह संज़्या छः लाख थी। अब इस साल अल्लाह तआला की कृपा से इन शामिल होने वालों की संज़्या बारह लाख से ऊपर जा चुकी है लेकिन अभी भी बड़ा काम शेष है। कुछ वृत्तांत भी इसके आपके सामने रखता हूँ।

तंज़ानिया के ही हमारे मुबल्लिग़ लिखते हैं कि एक नौ-मुबाए महिला, केवल एक महीना पहले उन्होंने बैअत की थी, एक गाँव की रहने वाली। उनको जब वक़्फ़-ए-जदीद की बरकतों के विषय में बताया गया तो कहने लगीं कि इस समय मेरे पास धनराशि तो नहीं है परन्तु क्यूँकि चन्दे की अदायगी का साल समाप्त हो रहा है, मैं चन्दों की बरकतों से वंचित नहीं रहना चाहती, थोड़ी सी प्रतीक्षा करें। इस प्रकार वे अपने घर गईं, वहाँ से अन्डे लिए, घर में अन्डे पड़े हुए थे, वे जाकर बाज़ार में बेचे तथा दो हज़ार शीलिंग उनकी प्राप्त हुई, वक़्फ़-ए-जदीद के चन्दे में दे गईं। अब ये एक महीना पहले अहमदी हुईं और उसको यह अनुभव हुआ, उस महिला को, कि चन्दा देना भी अनिवार्य है।

फिर गैज़्बिया से अमीर साहब लिखते हैं कि एक दोस्त हैं एक गाँव के एक वर्ष से बीमार थे और बीमारी के कारण न चल सकते थे न फिर सकते थे, न कोई काम कर सकते थे। इस कारण से आर्थिक दशा भी बड़ी दयनीय थी। अतः गत वर्ष जब वक़्फ़-ए-जदीद की तहरीक की गई तो उनके पास पाँच डलासी थे जो उनको किसी ने दान के रूप में दिए थे। वे पाँच डलासी उन्होंने वक़्फ़-ए-जदीद में अदा कर दिए। कहते हैं कि अल्लाह ने ऐसी कृपा फ़रमाई कि जो व्यक्ति चलने फिरने के योग्य भी नहीं था, अब यह ऐसी बरकत डाली उसके काम में कि जानवरों का एक रेवड़ उनके पास है तथा वे खेती बाड़ी करते हैं और उनका, वे कहते हैं कि यह सब जो अल्लाह तआला ने फ़ज़्ल फ़रमाया कि मेरी फ़स्लें भी अच्छी होने लगीं और मेरे पास जानवरों का बड़ा रेवड़ आ गया, ये सब चन्दे की बरकतें हैं।

फिन्लैंड से एक दोस्त लिखते हैं कि मैं 510 यूरो मेरा वादा था पिछले साल का तो इस साल मैंने कहा चलो स्थिति अच्छी नहीं तो मैंने अपना वादा एक सौ यूरो कर दिया कि अधिक नहीं दे सकता। कहते हैं, अल्लाह तआला ने मुझे इस प्रकार पकड़ा कि एक दिन अचानक मेरी गाड़ी सड़क पर ख़राब हो गई तथा उसको मरज़्मत के लिए वर्क्शाप ले जाना पड़ा। जो बिल आया वह बिल्कुल उतना ही था जितना पहले उन्होंने वादा किया हुआ होता था अर्थात 510 यूरो। तो घर पहुंचते ही उन्होंने कहा कि अल्लाह तआला ने वास्तव में मुझे सीख दी है फिर तुरन्त उन्होंने अपना वक़्फ़-ए-जदीद का वादा पूरा किया और चन्दा अदा किया।

सीरालियोन की एक अहमदी महिला हैड मिस्ट्रेस हैं प्राइमरी स्कूल की। कहती हैं कि मिशनरी साहब ने चन्दे की तहरीक की। मेरे पास पैसे नहीं थे, पहले मैं दे चुकी थी। कहती हैं, मेरा एक भाई था जो बड़े समय से ईसाई हो गया था तथा मुझसे नाराज़ था कि तुम भी ईसाई हो जाओ और छोड़कर चला गया था, अमरीका चला गया था। कहती हैं, कठिनाई पूर्वक चन्दा तो अदा कर दिया, हालात ऐसे नहीं थे। एक दिन उसका फोन आया तथा उसने कहा कि ठीक है, निःसन्देह तुम मुसलमान रहो, अहमदी रहो मुझे कोई आपत्ति नहीं है लेकिन इस प्रकार मुझे प्रेरणा मिली कि मैं तुम्हारी सहायता करूं इस लिए मैं तुम्हें धन राशि भेज रहा हूँ बड़ी एक धन राशि। इस प्रकार उसने धन राशि भेजी, भाई से सम्पर्क भी हो गया तथा समृद्धि भी पैदा हो गई।

हिन्दुस्तान से मुबल्लिग़-ए-सिलसिला लिखते हैं कोइम्बटूर से कि एक दोस्त अपनी बेटी के लिए आभूषण ख़रीदने बाज़ार गए। आभूषण पसन्द कर रहे थे कि जुम्अः का समय हो गया। उन्होंने दुकानदार से कहा कि हम नमाज़ पढ़कर आते हैं फिर आभूषण लेंगे। जुम्अः के ख़ुत्बः में उनको मेरे ख़ुत्बः का सारांश सुना गया जिसमें चन्दे के नव वर्ष का ऐलान था, तहरीक-ए-जदीद का। चन्दे के बारे में बताया गया और एक नेत्रहीन महिला की अर्थिक क़ुर्बानी का वर्णन भी किया था, इस वृत्तांत में सुनाया था। उसका इन दोस्त पर ऐसा प्रभाव हुआ कि उन्होंने चन्दा वक़्फ़-ए-जदीद जो शेष था, वह नमाज़ के बाद आभूषण ख़रीदने के बजाए वक़्फ़-ए-जदीद का चन्दा अदा कर दिया और मस्जिद से बाहर आकर जब अपनी पत्नि से इस बात का वर्णन किया तो वह भी बड़ी प्रसन्न हुई तथा कहने लगी कि ख़ुत्बः सुनकर मैंने भी यही निश्चय किया था कि यह चन्दा दे देते हैं अल्लाह तआला हमारी बेटी के आभूषण का भी कोई प्रबन्ध कर देगा।

हिन्दुस्तान में सहारनपुर से ही इंस्पैक्टर वक़्फ़-ए-जदीद लिखते हैं कि यू पी के एक गाँव में एक अहमदी दोस्त के घर गए वक़्फ़-ए-जदीद की वसूली के लिए तो उन्होंने अपनी पत्नि से कहा कि ईद आने वाली है और मेरे पास केवल दो सौ रुपए हैं। चाहो तो ईद के कपड़े बना लो, चाहो तो चन्दा अदा कर दो। उस समय श्रीमति जी ने कहा कि पहले चन्दा अदा करें, कपड़े तो बाद में भी बन जाएँगे। अभी कुछ महीने ही बीते थे कि उनके घर दोबारा ये चन्दा लेने गए तो उनका घर देखकर बड़ा हर्ष हुआ। श्रीमान जी ने बताया कि हमने जब से चन्दा अदा किया है तब से हमारे पास बहुत काम आया है। पहले तो मैं खेतों में दूसरों का ट्रैक्टर चलाता था अब अल्लाह तआला ने ऐसा फ़ज़्ल किया कि मैंने अपना निजी ट्रैक्टर ख़रीद लिया है और काम में अत्यधिक बरकत पड़ गई है।

हिन्दुस्तान से ही उड़ीसा, वहाँ के एक व्यक्ति उधार में डूबे हुए थे तथा इसके कारण लोगों से छिपते फिर रहे थे। छिप छिपा कर अपनी बस्ती छोड़कर हैदराबाद चले गए। अन्ततः जब उनके विषय में ज्ञात हुआ, सम्पर्क हुआ, मुरब्बी साहब ने या इंस्पैक्टर साहब ने उनको चन्दे का महत्व बताया। इस प्रकार उन्होंने किसी न किसी प्रकार अपना चन्दा अदा कर दिया तथा जमाअत से सम्पर्क भी रक्खा। इसके पश्चात कहते हैं कि अल्लाह तआला ने ऐसी बरकत फ़रमाई कि आमदनी पैदा होना शुरु हो गई तथा अल्लाह तआला से ऋण भी चुकता करा दिए तथा न केवल उनके ऋण चुकता हो गए जिसके कारण छिपते फिरते थे बल्कि कहते हैं कि मैंने अपना मकान भी ख़रीद लिया। अब उन्होंने अपना वादा उससे से कई गुणा बढ़कर लिखवा दिया। बंगाल और सिक्किम के इंस्पैक्टर साहब लिखते हैं कि दार्जिलिंग जमाअत के एक दोस्त दस साल पहले जमाअत में शामिल हुए थे। आर्थिक क़ुर्बानी में सदैव अग्रसर रहते थे। इस वर्ष जब वक़्फ़-ए-जदीद के बजट के लिए उनके पास पहुंचे तो उन्होंने बताया कि वालिद का आप्रेशन था जिसमें एक लाख रुपए ख़र्च हो गए हैं इस कारण से बड़ी तंगी है। उन्होंने अपना वक़्फ़-ए-जदीद का वादा जो उनका बड़ा भारी वादा था, बाईस हज़ार रुपए का, कम करके सतरह हज़ार रुपए करा दिया परन्तु जब वसूली करने गए तो

बाईस हज़ार अदा किया। उन्होंने कहा कि मुझे विचार आया कि मैं क्यूँ एक नेकी को जबकि मैं वादा कर चुका हूँ तो उसमें कमी करूँ। तो इस प्रकार भी अल्लाह तआला ईमानों में वृद्धि करता है तथा स्वयं आभास कराता है कि तुम लोग क़ुर्बानियाँ करो ताकि अल्लाह तआला की कृपा के अधिक उत्तराधिकारी बनो।

इसके पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर ने अफ्रीक़न देश बेनिन, आस्ट्रेलिया, नारवे, कोंगो, जर्मनी, कैनेडा, तंज़ानिया के कुछ निष्ठावान अहमदी दोस्तों के ईमान वर्धक वृत्तांत, वक़्फ़-ए-जदीद के चन्दे के परिणाम स्वरूप प्राप्त होने वाली बरकतों का वर्णन फ़रमाया। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि जो पवित्र आय से दी हुई एक खजूर की गुठली भी जो है, अल्लाह तआला उसे पहाड़ बना देता है। फिर यह भी फ़रमाया कि एक छोटा बछड़ा होता है और वह बड़ा जानवर बन जाता है। इसी प्रकार पवित्र आमदी से की गई क़ुर्बानी को अल्लाह तआला बढ़ाता है। अतः ये दृश्य अल्लाह तआला इस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत के लोगों को दिखाता है।

फ़रमाया- अब मैं पिछले साल की रिपोर्ट पेश करता हूँ। पाकिस्तान के बाद जो देश हैं उनमें इस साल पहले नज़्बर पर बर्तानिया है, अमरीका दूसरे नज़्बर पर, जर्मनी तीसरे नज़्बर पर, कैनेडा चौथे नज़्बर पर, हिन्दुस्तान पाँचवें पर, आस्ट्रेलिया छटे पर, इंडोनेशिया सातवें पर, इसी प्रकार एक मिडिल ईस्ट की एक अन्य जमाअत है, वह आठवें नज़्बर पर, बैल्जियम नवें पर तथा घाना दसवें पर।

स्थानीय मुद्रा में वसूली में वृद्धि के अनुसार घाना नज़्बर एक पर है इसके बाद अमरीका है फिर बर्तानिया है।

बड़ी जमाअतों में प्रति व्यक्ति अदायगी के अनुसार पहले एक मिडिल ईस्ट की जमाअत है, फिर अमरीका है, फिर दोबारा मिडिल ईस्ट की जमाअत है, फिर चौथे नज़्बर पर स्वीट्ज़र लैंड, फिर पाँचवें नज़्बर पर बर्तानिया, छटे पर आस्ट्रेलिया, सातवें पर बैल्जियम, आठवें पर बैल्जियम, नवें पर जर्मनी, दसवें पर कैनेडा।

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से इस साल वक़्फ़-ए-जदीद में सम्मिलित होने वालों की वृद्धि के अनुसार अफ्रीक़ा के अतिरिक्त इंडिया है नज़्बर एक पर, फिर कैनेडा, बर्तानिया और अमरीका, ये विशेष हैं परन्तु सर्वाधिक वृद्धि अफ्रीक़ा के देशों में हुई है।

मैं कई बार पहले भी ध्यान दिला चुका हूँ कि दफ़्तर अत्फ़ाल में जिस प्रकार कैनेडा में काम हो रहा है, सुसंगठित होकर, शेष विश्व के जो बड़े बड़े देश हैं उनको भी इस ओर ध्यान देना चाहिए और काम करना चाहिए। इस विषय में यह भी बता दूँ कि दफ़्तर अत्फ़ाल केवल वक़्फ़-ए-जदीद में होता है, तहरीके जदीद में नहीं होता।

सामूहिक वसूली के अनुसार भारत के प्रदेश जो हैं, केरल नज़्बर एक, तमिल नाडू नज़्बर दो, जम्मू कश्मीर और तेलंगाना फिर कर्नाटक फिर वैस्ट बंगाल फिर उड़ीसा फिर पंजाब फिर उत्तर प्रदेश फिर देहली फिर महाराष्ट्र। और जमाअतें जो हैं वसूली की दृष्टि से नज़्बर एक पर करुलाई, नज़्बर दो पर कालीकट फिर हैदराबाद फिर पित्था पीरियम फिर क़ादियान फिर कुन्नूर टाउन फिर कलकत्ता फिर सोलूर फिर बंगलोर बंगार्डी और ऋषि नगर।

अल्लाह तआला समस्त क़ुर्बानी करने वालों की जानों और मालों में अत्यध्कि बरकतें डाले तथा इस वर्ष में पहले से बढ़कर जहाँ क़ुर्बानी की तौफ़ीक़ दे वहीं संज़्या में भी वृद्धि फ़रमाए।

अन्त में हुज़ूर पुर नूर ने दो निधन होने वालों मुकर्रम मुहज़्मद असलम शाद मंगला साहब प्राईवेट सैक्रेट्री रबवा और मुकर्रम अहमद शेर जूईया साहब के सद्कर्मों तथा सेवाओं का वर्णन फ़रमाया तथा उनके जनाज़े की नमाज़ पढ़ने की घोषणा फ़रमाई।